शोध सार

ग़ज़ल अपनी नाज़ुक ख़्याली और ख़ूबसूरत अंदाज़-ए-बयाँ से पहचानी जाने वाली एवं शायरों द्वारा अपने भावों को व्यक्त करने की एक प्रमुख विधा रही है। इस विधा का उद्गम अरबी साहित्य की प्रमुख विधा 'क़सीदे' के एक हिस्से से हुआ है जिसे 'तश्बीब' कहते हैं लेकिन इसका विस्तार अरब में न होकर ईरान के फ़ारस प्रान्त में हुआ। सबसे पहले फ़ारसी भाषा में ग़ज़ल कही गई। इसके बाद ग़ज़ल हिन्दुस्तान पहुँची और उसे इसी रूप में स्वीकार कर लिया गया है। हिन्दुस्तान पहुँचकर ग़ज़ल ने हिन्दुस्तानी संस्कृति को अपने भीतर समाहित कर लिया और हिन्दुस्तानी ग़ज़ल कहलाने लगी। हिन्दुस्तान की भाषा और संस्कृति में घुलने-मिलने के बाद ग़ज़ल का विस्तार तेज़ी से होने लगा और ग़ज़ल हिन्दुस्तानी ज़बान या उर्दू ज़बान की एक पहचान ही बन गई। उर्दू ज़बान में ग़ज़ल ख़ूब फली-फूली। इससे प्रभावित होकर पंजाबी, गुजराती, मराठी, हिंदी, तेलुगु आदि हिन्दुस्तान की अनेक ज़बानों में ग़ज़ल कही जाने लगी।

ग़ज़ल मूलतः प्रेमी-प्रेमिका के बीच प्यारभरी बातचीत को कहा जाता है जिसमें वे इस दुनिया से परे अपनी एक अलग ही दुनिया की कल्पना करते हैं। इस बातचीत में दोनों के बीच रसीली अभिव्यक्ति होती है। इसके साथ ही इस गुफ़्तगू में एक दूसरे का रूठना-मनाना आदि भी शामिल रहता है।

ग़ज़ल के सम्बन्ध में विद्वानों के विभिन्न मत रहे हैं। ग़ज़ल के नामकरण, अर्थ एवं परिभाषा आदि को लेकर सभी ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। उर्दू के विद्वानों को छोड़कर ज़्यादातर विद्वानों ने तो ग़ज़ल को उपेक्षित ही रखा है। हिंदी के विद्वानों ने ग़ज़ल को कई नाम देने की कोशिशें की हैं। किसी ने गीतिका कहा तो किसी ने मुक्तक, तेवरी, ग़ज़लिका, नई ग़ज़ल, आवामी ग़ज़ल, जनवादी ग़ज़ल आदि। ऐतिहासिक दृष्टि से ग़ौर किया जाए तो स्पष्टतः हम देख सकते हैं कि इसका नामकरण मूलतः अरबी से होता है और फिर यह ईरान में अपने क़दम रखते हुए हिन्दुस्तान पहुँचकर

यहाँ की भाषा-संस्कृति में घुलमिल कर अपना विस्तार करती है। तत्पश्चात उर्दू में फलती-फूलती यह हिंदी में अपने कदम रखती है। इसके अर्थ और परिभाषा को लेकर भी अनेक विद्वानों के अपने-अपने मत रहे हैं। ज़्यादातर विद्वान एक जैसी ही बातें करते हैं जहाँ 'मद्दाह' 'प्रेमिका से वार्तालाप' कहते हैं वहीं डॉ. नरेश 'औरतों के विषय में बात करना' बताते हैं। इसी तरह रूद्र काशिकेय इसका अर्थ 'बार-बार बातचीत करना' बताते हैं। इसके अलावा कई दंतकथाएँ भी रही हैं। ग़ज़ल की परिभाषा देते हुए हिंदी ग़ज़लकार गोपालदास 'नीरज' ग़ज़ल को काव्य की वो रसमय विधा मानते हैं जो सूक्ष्म और संकेतों की भाषा बोलती हो।

ग़ज़ल की एक लम्बी परम्परा रही है जो अरब से होते हुए ईरान और फिर हिन्दुस्तान आती है। इसके इतिहास की चर्चा करते हुए पाया जाता है कि यह फ़ारसी से अपना विस्तार करते हुए उर्दू में अपना महत्त्वपूर्ण मुक़ाम हासिल करती है। इस दौरान बहुत से शायर हुए जिन्होंने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए ग़ज़ल को माध्यम बनाया और साहित्य निधि में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। फ़ारसी के पहले शायर रौदक़ी थे जिनसे फ़ारसी ग़ज़ल की शुरुआत होती है और वह अपना विकास करती है। उर्दू और हिंदी के पहले शायर अमीर ख़ुसरो हैं जिन्होंने हिन्दुस्तान में ग़ज़ल की शुरुआत की लेकिन बहुत से विद्वान क़ुली क़ुतुबशाह को उर्दू ग़ज़ल का पहला शायर मानते हैं। इसके बाद बहुत से शायर हुए जिन्होंने ग़ज़ल की दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनाई। वली, मीर तक़ी मीर, मीर दर्द, सौदा, नज़ीर अकबराबादी, आतिश, नासिख़, ग़ालिब, मोमिन, ज़ौक, ज़फ़र, हाली, शिबली, इक़बाल, फ़ानी, जिगर, मजाज, जोश, फ़िराक़ गोरखपुरी, फ़ैज़, ताबाँ जैसे तमाम प्रमुख उर्दू शायर रहे हैं। इसी के समानांतर हिंदी ग़ज़ल भी अपना विकास करती रही लेकिन इसकी गति अपेक्षाकृत बहुत धीमी रही। अमीर ख़ुसरो से शुरू होती ग़ज़ल परंपरा को कबीर, प्यारेलाल शौक़ी और गिरधरदास ने ग़ज़ल शैली में रचनाएँ देते हुए आगे बढ़ाया। इसके बाद भारतेंदु इस पर ध्यान देते हुए ग़ज़लें कहते हैं। भारतेंदु के साथ-साथ हिंदी के कवि ग़ज़ल विधा में आजमाइश करते हैं और विभिन्न वर्ण्य विषयों पर ग़ज़ल रचनाएँ प्रस्तुत करते हैं। हिंदी ग़ज़ल में एक नए दौर की शुरुआत शमशेर बहादुर सिंह के बाद होती है जिसमें श्रृंगारिकता आदि की लीक से हटकर सामाजिक यथार्थ की बात की जाने लगती

है। शमशेर बहादुर सिंह से प्रेरित होकर दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल क्षेत्र में अपने संग्रह 'साए में धूप' से क़दम रखा। इसके बाद हिंदी में बहुत ही तेज़ी से ग़ज़ल की धारा बहने लगती है। इस दौरान कुछ अच्छी तो कुछ बेमतलब ग़ज़लें भी ग़ज़लकारों ने लिखीं। यह साठोत्तरी दौर था जिसमें ग़ज़ल आम आदमी से जुड़ती है। सिर्फ़ ग़ज़ल ही नहीं बल्कि साहित्य की अन्य विधाएँ भी सामाजिक यथार्थ से जुड़ती हैं। इस दौर में हिंदी में तमाम ग़ज़लकार अपनी ग़ज़ल रचनाएँ प्रस्तुत करते हैं। ग़ज़लकारों में भवानी शंकर, चंद्रसेन 'विराट', ज़हीर क़ुरैशी, डॉ. कुंवर बेचैन, अदम गोंडवी, रामकुमार कृषक, बल्ली सिंह चीमा, वशिष्ठ 'अनूप' आदि प्रमुख हैं।

शुरुआती दौर में ग़ज़ल मूलतः श्रृंगारिक थी जिसमें हुस्न-ओ-इश्क़, साक़ी-शराब की बातचीत रहती थी किन्तु धीरे-धीरे समय के अनुसार परिवर्तन आते रहे और वर्तमान में इसमें और भी विषय जुड़ते चले गए। वर्तमान समय में ग़ज़ल चाहे किसी ज़बान में कही जा रही हो उसमें आम आदमी से मुताल्लिक़ बात कही जा रही है। विशेषकर हिंदी ग़ज़ल में तो इसका विस्तार दुष्यंत कुमार से होता है और आज अपनी प्रगति की ओर प्रयासरत है।

वर्तमान में इसी परंपरा को आगे की ओर ले जाने का कार्य वशिष्ठ 'अनूप' अपनी ग़ज़लों के माध्यम से कर रहे हैं। वशिष्ठ 'अनूप' शमशेर बहादुर सिंह और दुष्यंत कुमार से प्रेरित ग़ज़लकार हैं। उनकी ग़ज़लें आम आदमी से जुड़ती हुई उनके सुख-दुःख की बात करती है। उनकी ग़ज़लों के वर्ण्य विषय में जहाँ एक तरफ़ समाज एवं राजनीति से उत्पन्न समस्याएँ हैं वहीं दूसरी तरफ़ उससे निपटने के उपाय भी हैं। वशिष्ठ जी की ग़ज़लों ने राजनैतिक चेतना के साथ-साथ स्त्री की पीड़ा व उसका संघर्ष, आम आदमी की पीड़ा एवं उसका संघर्ष, भूख, गरीबी, भ्रष्टाचार आदि के साथ-साथ पर्यावरण एवं प्रकृति की तरफ़ भी ध्यान खींचा है। पारंपरिक ग़ज़ल को भी स्थान देते हुए ग़ज़ल की नाज़ुक ख़्याली व ख़ूबसूरत अंदाज़-ए-बयाँ से ओतप्रोत अपनी ग़ज़लों में प्रेम और सौन्दर्य का चित्रण भी किया है। यह बहुत ग़ौर करने वाली बात है कि यह सब करते हुए उनकी ग़ज़लों में कहीं अश्लीलता नहीं आती है। भाषा की दृष्टि से वशिष्ठ जी ने अपनी ग़ज़लों में अरबी-फ़ारसी-उर्दू आदि के साथ-साथ हिंदी के शुद्ध शब्दों एवं देशज शब्दों का भी स्वाभाविक प्रयोग किया है। इतना ही नहीं जहाँ ज़रूरत पड़ी वहाँ

अंग्रेज़ी के शब्दों से भी परहेज़ नहीं किया है। फलतः उनकी ग़ज़लों में अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग बहुतायत मिलता है। उनकी ग़ज़लों का शिल्प भी बेहतरीन है जिसमें विभिन्न अलंकार, प्रतीक, छंद, बिम्ब आदि का प्रयोग हुआ है जिससे उनकी ग़ज़लें और भी निखरकर पाठक-श्रोता को आकर्षित करती हैं।